युग दृष्टा, युग सृष्टा : आचार्य तुलसी

–प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय

आज हम ऐसे महामना की जन्म जयन्ती मना रहे हैं, जो कई सदियों बाद मनुष्य के रूप में उस धरा पर जन्म लेते हैं। बचपन से ही वे कुशाग्रबुद्धि, पापभीरूता एवं संत प्रकृति के धनी थे। बचपन से ही आप में वैराग्य का बीज वपन हो चुका था तभी आपने केवल 11 वर्ष की वय में ही आचार्यश्री कालूगणी के पुनीत कर–कमलों से मुनि दीक्षा ग्रहण की। गुरूदेव कालूगणि हीरों के पारखी थे। उन्होंने मुनि तुलसी को हीरे के रूप में तलाश एवं तरास कर मात्र 16 वर्ष की अवस्था में ही मुनि नथमल (वर्तमान आचार्य महाप्रज्ञ) एवं मुनि बुद्धमल (शासन गौरव मुनि बुद्धमलजी) का शिक्षा गुरू बनाया। आप में एक अच्छे शिक्षक के सभी गुण मौजूद थे। आप प्रारम्भ से ही एक कुशल प्रशासक एवं अनुशासन प्रिय मुनि थे। आपकी योग्यता का मूल्यांकन कर गुरू कालूगणि ने आपको युवाचार्य घोषित किया। आप केवल तीन दिन युवाचार्य रहकर कालूगणि के स्वर्गारोहण पर 22 वर्ष की लघु वय में ही विशाल तेरापंथ धर्म संघ के आचार्य बन गये।

योग्यता का सम्बन्ध वय से नहीं होकर मेधावीपन, प्रशासनिक क्षमता, अनुशासनप्रियता एवं संघ को साथ लेकर चलने के गुणों से होता है। प्रारम्भ से ही आप में एक कुशल आचार्य के गुण नजर आने लगे। आप युग दृष्टा, युग सृष्टा थे। युग की नब्ज को अच्छी तरह से जानते थे। तभी आप युग प्रधान कहलाए। वे जैन धर्म को जन धर्म बनाना चाहते थे। उनका व्यक्तित्व बहुत विशाल था। आपके आचार्य बनते ही देश में अंग्रेजों की गुलामी से आजादी हासिल करने का बिगुल बज रहा था। महात्मा गांधी सत्याग्रह एवं अहिंसा के माध्यम से देश की जनता को आजादी दिलाने के लिए कड़े संघर्ष कर रहे थे। आचार्य तुलसी को वर्तमान युग का गाँधी कहा जा सकता है। आपकी विचारधारा महात्मा गाँधी से बहुत मेल खाती है। आचार्य तुलसी अहिंसा के पुजारी थे। तेरापंथ जैसे विशाल धर्मसंघ के आचार्य होकर भी आपका हृदय मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत था। वे मानवता के मसीहा थे। आचार्य तुलसी की स्पष्ट मान्यता थी–

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से।

राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।

वे विश्व की सबसे छोटी इकाई मनुष्य को सुधारना चाहते थे। आचार्य तुलसी की मान्यता थी–नैतिकता एवं आध्यात्मिकता एक सिक्के के दो पहलू है। व्यक्ति नैतिक बने बिना धार्मिक नहीं बन सकता। वे धर्म को मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरूद्वारा का विषय नहीं मानकर

उसे कार्यालय, दुकान एवं मनुष्य की कर्मभूमि में लाना चाहते थे। वे मनुष्य को मेंन से ''गुडमेंन'' बनाना चाहते थे। आचार्य तुलसी कहा करते थे, ''एक नैतिक व्यक्ति किसी का शोषण नहीं कर सकता है, किसी का अहित नहीं कर सकता है, अप्रमाणिक नहीं हो सकता।'' नैतिक मूल्यों की स्थापना तथा गाँधीजी के सपनों का भारत बनाने के लिए आचार्य तुलसी ने 1 मार्च, सन् 1949 को **''अणुव्रत दर्शन''** की स्थापना की। अणुव्रत दर्शन वर्ण, जाति, भाषा, धर्म, लिंग, प्रादेशिकता से मुक्त था। अणु का अर्थ छोटा, व्रत का अर्थ नियम छोटे–छोटे नियमों को धारण कर नैतिकता, प्रामाणिकता, सादगी, प्रसन्नता एवं शांति का जीवन जीना अणुव्रत का उद्देश्य था। आचार्य तुलसी ने जब भारत के प्रथम राष्ट्रपति महामहिम राजेन्द्र बाबू के सामने ''अणुव्रत'' की व्याख्या प्रस्तुत की तो राष्ट्रपति महोदय ने अणुव्रत का सदस्य बनाने की इच्छा जाहिर की। आचार्य तुलसी ने कहा, ''मैं आपको अणुव्रत का सदस्य नहीं ''अणुव्रती'' बनाना चाहता हूँ।'' राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसादजी पहले अणुव्रती बने। अणुव्रत के माध्यम से भारत की जनता में नैतिकता की लौ प्रज्वलित हुई। आपने इस प्रकार महात्मा गाँधी की कमी को पूरा किया। **अणुव्रत ने आचार्य तुलसी को एक ''राष्ट्रसंत'' एवं जैन धर्म तथा तेरापंथ को जन धर्म की पहचान दी।**

आचार्य तुलसी अर्द्ध खुली आँखों से दिवा स्वप्न देखते तथा उसे पूरा करते। आपने जो–जो स्वप्न लिया उसे पूरा किया। आपका संकल्प, मनोबल बहुत दृढ़ था। आचार्य तुलसी विकट परिस्थिति में भी निराश नहीं होते थे। वे कहा करते थे–

चिंता नहीं चिंतन करो, व्यथा नहीं व्यवस्था करो, प्रशंसा नहीं प्रस्तुति करो।

आपके कुशल प्रशासन की पूरे तेरापंथ धर्मसंघ पर अटूट छाप थी। अनुशासनहीनता आपको किसी भी स्तर पर पसंद नहीं थी। आप एक नारियल की तरह कुशल प्रशासक थे। नारियल उपर से कठोर होता है उसी तरह आप साधु–साध्वी, श्रावक–श्राविका समुदाय को उनकी गल्ती के अनुरूप कठोर प्रायश्चित करवाते तो समय आने पर चतुर्विध धर्मसंघ के कार्यों का मूल्यांकन कर उन्हें प्रोत्साहन, प्रशंसा एवं अलंकरण भी प्रदान करते थे। आपके शासन काल में अनेक कार्याकर्त्ताओं का निर्माण हुआ जो आज तक भी जीवनदानी कार्याकर्त्ता के रूप में संघ की सेवा कर रहे हैं। आप एक कुशल लेखक, साहित्यकार, वक्ता एवं गायक थे। आपके द्वारा लिखित ग्रन्थ आज मानव जाति के लिए पठनीय एवं अनुकरणीय सिद्ध हो रहे हैं। आचार्य महाप्रज्ञ, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा एवं युवाचार्य महाश्रमण आपके द्वारा तरासी हुई सुन्दर कृतियां हैं। जैनागामों का सम्पादन आपके जीवन का विशिष्ट एवं दुरूह कार्य है। इतना विशाल आगमों का सम्पादन शायद ही वर्तमान के किसी जैनाचार्य ने किया हो। जैन आगमों का हिन्दी में सरल विवेचन कर आम आदमी के लिए पठनीय बना दिया। यही कारण है कि ''आगम मन्थन'' प्रतियोगिताओं में आज श्रावक समाज का लगातार स्वाध्याय का

रूझान बढ़ रहा है। आगम सम्पादन में आचार्य महाप्रज्ञजी, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी एवं युवाचार्य महाश्रमणजी का सहयोग सराहनीय रहा।

आम आदमी के भावात्मक विकास के लिए आप लगातार चिंतित रहते। तभी आपने युवाचार्य महाप्रज्ञ को जैन धर्म में ध्यान के प्रति लुप्त पिपासा को पुनः जाग्रत करने हेतु शोध करने का निर्देश दिया। युवाचार्य महाप्रज्ञ ने प्राचीन जैन आगमों के आधार पर वर्तमान मेडिकल साइंस का समावेश कर आचार्य तुलसी के सामने ध्यान की पूरी योजना रखी तथा सन् 1975 में वह पद्धति **''प्रेक्षाध्यान''** के माध्यम से प्रचलित हुई। पूरे विश्व में ''प्रेक्षाध्यान'' एक शरीरिक, मानसिक एवं भावात्मक सम्पूर्ण स्वास्थ्य की विश्वसनीय पद्धति के रूप में प्रख्यात हो चुकी है। विश्व के हर वर्ग के लोग इस पद्धति के उपयोग से लाभन्वित हो रहे हैं तथा प्रसन्नता एवं शांति का जीवन जी रहे हैं। आचार्य तुलसी ने महसूस किया–वर्तमान की शिक्षा विद्यार्थी को अपने–अपने क्षेत्र में पूर्ण बौद्धिक बनाती है लेकिन भावात्मक पक्ष यानि भाव शुद्धि का उसमें कोई स्थान नहीं है। आचार्य तुलसी ने महससू किया एक पढ़ा लिखा, बौद्धिक, ज्ञानी व्यक्ति क्यों आत्महत्या करता है ? क्यों तनाव में आता है ? उन्होंने पाया कि जो शिक्षा विद्यालयों, महाविद्यालयों में दी जाती है उसमें भावात्मक समझ को बढ़ाने की शिक्षा का कोई अंश नहीं है। इसी बात से प्रभावित होकर आचार्य तुलसी एवं युवाचार्य महाप्रज्ञ ने वर्ष 1978 में शिक्षा पाठ्यक्रम के साथ ''जीवन विज्ञान'' पद्धति को जोड़ने की पेशकश की। आज नर्सरी से लगाकर पी–एच्.डी. की डिग्रियों में जीवन विज्ञान का पाठ्यक्रम जोड़ा गया है तथा भारत के करोड़ों छात्र इससे लाभन्वित होकर संतुलित जीवन जीने की कला को जानने लगे हैं। जीवन विज्ञान आचार्य तुलसी एवं युवाचार्य महाप्रज्ञ का मानव जाति को एक बहुत बड़ा अवदान है। जीवन विज्ञान में प्रेक्षाध्यान, अणुव्रत, अहिंसा के सिद्धांतों का समावेश है।

आचार्य तुलसी के विशिष्ट अवदानों में दीक्षा से पूर्व साधु जीवन की शिक्षा का उपक्रम पा.शि.सं. एवं समण श्रेणी का सूत्रपात है। 1 मार्च 1949 को पा.शि.स. को स्थापित कर शिक्षित प्रशिक्षित योग्य मुमुक्षुओं को तैयार करने का उपक्रम प्रारंभ किया तथा वर्ष 1980 में साधु एवं श्रावक के बीच की कड़ी समण श्रेणी की स्थापना की। आज सुयोग्य समणश्रेणी भगवान महावीर की वाणी, जैन दर्शन को देश व विदेश में त्वरित गति से पहुँचा रही है। प्रारंभ में आपके इस निर्णय का कड़ा विरोध हुआ लेकिन आज देश–विदेश में समणश्रेणी की योग्यता एवं उपयोगिता को देखकर पूरा जैन जगत् दांतों तले अंगुली दबाता है। आपने मानव मात्र को **''संयमः खलु जीवनम्''** का छोटा–सा घोष देकर आज की मानव जाति को तनाव, विषाद, एवं निराशा से उबारा। वे क्रिया–काण्डों, साधु–वस्त्रों एवं औपचारिकता में धर्म नहीं मानते थे बल्कि उनकी स्पष्ट मान्यता थी–**''आत्म शुद्धि साधनम् धर्मः''**। आत्म शुद्धि के साधन को धर्म कहते हैं फिर उनका नाम जैन, बौद्ध, सिक्ख, ईसाई, इस्लाम धर्म कुछ भी हो सकता है।

आचार्य तुलसी ने 60 वर्ष तक कुशल आचार्य पद का संचालन किया। आपका जीवन संघर्षों से भरा था। परन्तु उनका दृढ़ संकल्प था **"निज पर शासन फिर अनुशासन"**। वे स्व नियंत्रण, संयम, आत्मबल, अनुशासन एवं आध्यात्मिकता पर बहुत बल देते थे। किसी भी परिस्थिति में अपनी आराधना–साधना को प्रथम प्राथमिकता देते थे। उनका मनोबल इतना मजबूत था कि प्रतिदिन 16 घंटे अनवरत् जन–कल्याण का कार्य करते हुए भी कभी थकते नहीं थे। उन्होंने अपने जीवन में प्रवृत्ति एवं निवृत्ति के संतुलन को आत्मसात् कर लिया था। आपकी मूर्त बहुत मोहनीय थी। आँखों से अमृत बरसता था। **एक बार भी आप स्नेह भरी आँखों से किसी की तरफ निहार लेते तो वह धन्य हो जाता था। "चरेवेति–चरेवेति" का लक्ष्य लेकर महलों से झोंपड़ियों तक लाखें कि.मी. की पद यात्रा कर मानव जाति में अहिंसा, संयम एवं नैतिकता की अलख जगाई।**

आपकी साधना इतनी निर्मल थी कि वचन सिद्धि की योग्यता हासिल कर ली थी। पवित्र हृदय से जो भी वचन फरमाते वह प्रायः सिद्ध हो जाता था। इसी कारण श्रावक वर्ग की आप में अटूट श्रद्धा थी। साधु–साध्वी समाज को शिक्षित प्रशिक्षित करने के लिए प्रतिदिन प्रयोगों के माध्यम से अध्यापन करवाते थे। आप उच्चारण शुद्धि पर बहुत बल देते थे। एक–एक साधु का उच्चारण शुद्ध करवाने के लिए घंटों–घंटों तक स्वयं उच्चारण कर उस साधु को शुद्ध उच्चारण सीखाते। आप में वाक्–पटुता गजब की थी। जो भी व्यक्ति आपके सम्पर्क में आता आपकी वाणी से निकले वचन को खाली नहीं जाने देता, उसकी क्रियान्विति करता। एक बार सम्पर्क में आने वाला व्यक्ति आपके शुद्ध आभामंडल से प्रभावित होकर हमेशा के लिए आपका भक्त बन जाता तथा पुनः दर्शनों को लालायित रहता।

आचार्य तुलसी प्रयोगधर्मा थे। वे कहा करते थे, "बिना प्रयोग के परिवर्तन संभव नहीं हो सकता। बिना प्रयोग के की गई साधना रूढ एवं मात्र औपचारिक हो जाती है। लम्बे समय तक साधना करने के बाद भी लोगों की जीवन शैली व स्वभाव में परिवर्तन नहीं आता इसका कारण है–साधना प्रयोगपूर्वक नहीं की जा रही है। उदाहरण के तौर पर किसी व्यक्ति को क्रोध ज्यादा आता है तो क्रोध का प्रतिद्वन्दी क्षमा को क्रोध के सामने खड़ा किया जाए। क्षमा विकास के विभिन्न प्रयोग किए जाएं। क्षमा की अनुप्रेक्षा बार–बार की जाए। इन प्रयोगों से व्यक्ति का क्रोध एक दिन अवश्य उपशांत हो जाता है।" आचार्य तुलसी कहते हैं "साधु–जीवन में उपशम का सबसे बड़ा स्थान है अतः इसकी उपासना होनी चाहिये। जब कभी आवेग आये तो **"उवसेमण हणे सोहं"** इसका चिंतन करना चाहिए और आवेग को शांत करते रहना चाहिए। प्रणायाम और संकल्प शक्ति से मन को एकाग्र करने का प्रयास करते रहना चाहिए। व्यक्ति को लक्ष्य को सफल बनाने में प्रयत्नशील रहना चाहिए। **मन को समाधिस्थ, तन को स्वस्थ एवं वचन को संयत रखना चाहिए यही साधना का मार्ग है।"** सत्य की खोज वैज्ञानिक भी करता है तथा आत्म–साधक भी करता है। वैज्ञानिक पदार्थ जगत् के

सत्य की खोज में स्थूल से सूक्ष्म में जाता है इसी प्रकार आत्मज्ञानी भी आत्मा के प्रयोगों में स्थूल से सूक्ष्म की ओर बढ़ता है। अभ्यास के बिना कोई प्रयोग पक नहीं सकता। सत्य की खोज के लिए निरंतर प्रयोग जारी रहे ऐसी आचार्य तुलसी की मान्यता थी।

आचार्य तुलसी बाह्य पवित्रता के साथ आन्तरिक जगत् की पवित्रता को विशेष महत्त्व देते थे। आन्तरिक जगत् में प्रवेश के लिए आचार्यश्री कायोत्सर्ग को बहुत उपयोगी साधन मानते थे। वे स्वयं कायोत्सर्ग का निरंतर अभ्यास करते थे। कायोत्सर्ग के निरंतर अभ्यास से उनकी कायगुप्ति सध गई थी तथा वे 4–5 घंटे एक ही आसन में बैठे रह सकते थे। आन्तिरिक शुद्धि के लिए आप ''जाप'' को बहुत अच्छा माध्यम मानते थे। पूर्ण एकाग्रता से नियमित रूप से लगातार किये गए ''जाप'' से भाव शुद्धि होती है तथा व्यक्ति वचन सिद्ध भी हो सकता है।

आचार्य तलुसी जन कल्याण एवं जन जागरण को अपनी साधना का अंग मानते थे। इसी कारण उन्होंने आज के युग की त्रस्त जनता को अपनी जीवन शैली बदलने के लिए कई अवदान दिये। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अहिंसा प्रशिक्षण ऐसे अवदान हैं, जिसमें मनुष्य, समाज, राष्ट्र, विश्व की वर्तमान युग की समस्याएँ भ्रष्टाचार, अनैतिकता, असंवेदनशीलता, आतंकवाद, अवसाद, निराशा, असहनशीलता, अतिभोगवाद, स्वार्थपरता का स्थायी समाधान है। आचार्य तुलसी द्वारा मानव जाति के कल्याण के लिए दिए गए इन अवदानों के लिए मानव जाति सदैव उनके प्रति कृतज्ञ रहेगी। मानवता के मसीहा को शत्–शत् नमन्।